LNMUonline.com

Sanskrit (Hons.) Paper-II

सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : LNMUonline.com
   (क) पूर्व मेघ के पठित अंश के आधार पर कालिदास के प्रकृति चित्रण की समीक्षा करें।
   अथवा, 'उपमा कालिदासस्य' इस उक्ति की समीक्षा करें।
   (ख) 'किरतार्जुनीयम् के द्वितीय सर्ग का सारांश लिखें।'
   अथवा, 'भारवेरर्थगौरवम्' इस कथन की सार्थकता स्पष्ट करें।
   (ग) श्रीमद्भगवद्गीता के 12वें अध्याय का सार प्रस्तुत करें।
   अथवा, गीता के 12वें अध्याय के आधार पर भक्ति योग का वर्णन करें।
2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो श्लोकों की सप्रसंग व्याख्या करें :
   (क) धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः
   सन्देशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।
   इत्यौत्सुक्यादपरिगणय-न्गुह्यकस्तं ययाचे
   कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु।।
   (ख) संतप्तानां त्वमसि शरणं तत्पयोद प्रियायाः
   संदेशं मे हर धनपति क्रोधविश्लेषितस्य।
   गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणं
   बाह्योद्यानस्थतहरशिरश्चन्द्रिकाद्यौतहर्म्या।।
   (ग) मय्येव मन आधत्स्व माये बुद्धि निवेशाय
   निसिष्यसि मय्येव इत ऊर्ध्वं न संशयः।।
   (घ) परिणामसुखे गरीयसि व्यकेऽस्मिन् वचसि क्षतौजसाम्।
   अतिवीर्यतीव भेषजे बहुरल्पीयसि दृश्यते गुणः।। LNMUonline.com
3. निम्नलिखित श्लोको में से किन्हीं दो का हिन्दी या अंग्रेजी मे अनुवाद करें :

   (क) जातं वंशे भुवविदितेपुष्करावर्तकानां
   जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।
   तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद्दूरबन्धुर्गतोऽहं
   याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाऽधमे लब्धकामा।।
   (ख) तां चावश्यं दिवसगणनातत्परामेकपत्नी
   मव्यापन्नामविहितिद्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम्।
   आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां
   सद्यःपाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि।।
   (ग) अथचित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम्।
   अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय।।
   (घ) द्विषतामुदयः सुमेधसा गुरुरस्वन्ततरः सुमर्षणः।
   न महानपि भूतिमिच्छता फलसम्पत्प्रवणः परिक्षयः।।
4. निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दें :
   (क) 'काव्यदीपिका' के आधार पर काव्य प्रयोजनों का निरूपण करें।
   (ख) लक्षणा का स्वरूप स्पष्ट करते हुए, उसके भेदों का निरपूण करें।
5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की व्याख्या करें :
   (क) इष्टार्थव्यच्छिन्ना पदावली काव्यम्।
   (ख) खण्डकाव्यं भवेत् काव्यस्यैकदेशानुसारि च। LNMUonline.com
   (ग) दृश्यं तत्रामिनयं तद्रूपारोपात्तु रूपकम्। (घ) काव्यशोभाकरान् धर्मानलङ्.रान् प्रचक्षते।

LNMUonline.com